गुरबानी का अध्यात्मिक प्रवाह : नाद

डॉ. हरजस कौर
एसोसिएट प्रोफैसर, सरकारी कालेज, रूपनगर

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संगीतात्मक ध्वनियों का विलक्षण प्रवाह है जो अलौकिक धारा की तरह सारी सृष्टि में प्रवाहित होता है। इस अलौकिक नाद के आनन्द को अनुभव करने और जानने की एक कठिन अध्यात्मिक प्रक्रिया का प्रतिफल है। यह 'धुर की बानी' जीवन रहस्य की इसी सच्चाई को व्यक्त करती हैः–

रागु नादु सभु सचु है कीमति कही ना जाए
रागै नादै बाहरा इनी हुक्कम न बुझिया जाए।।[1]

साधारण तौर पर नाद का अर्थ आवाज़ है, वह आवाज जो सुनने में मधुर लगे। आवाज की यही मधुरता संगीत कला का आधार बनती है, रस इस की अनुभूती है। आधुनिक विज्ञान के अर्न्तगत माना जाता है कि अकेला मानव ही नहीं बल्कि जीव वनस्पति भी इस रस से प्रभावित होती है। अध्यात्मिक तौर पर एक भक्त संगीतात्मक मधुर ध्वनि के माध्यम के साथ संवेदनशील सूक्ष्म भाव परमात्मा को अर्पन करके आनंद की अवस्था तक अनुभव प्राप्त करता है। इस लिए दर्शन शास्त्र नाद को ब्रहम रूप वर्णित करते है। इस की पृष्ठभुमि में 'शब्द' को आधार माना जाता है। क्योंकि वाणी से ही सारी सृष्टि का मूल है। मधुर संगीत ध्वनियां भी इस वाणी संचार का अंश है। इसलिए संसार को नाद या शब्द की अभिव्यक्ति कहा जाता है। नाद की सर्वव्यापकता के बारे में डा. सौभाग्यवर्धन बृहस्पति लिखते है, 'नाद की इसी सत्ता के कारण आत्मा को चेतन माना जाता है। आत्मा क्रिया रहत है और इस के अंदर का नाद ही क्रियाशील है।'[2]

जहां भारतीय अध्यात्म में नाद को भक्ति साधना का स्रोत माना जाता है वहां साथ ही भारतीय संगीत में इस को उच्चतम अनुभूती और संचार माध्यम माना जाता है। डा. श्री मति महारानी शर्मा के अनुसार, 'भक्ति के जितने भी साधन जप, तप, ध्यान, योग आदि हैं उन सभी में नाद रूप संगीत का महत्व सर्वश्रेष्ठ माना गया है।'[3]

सिद्वान्त तौर पर नाद के दो प्रकार माने जाते हैं, अनाहद नाद और आहत नाद। वह नाद जो केवल ज्ञान से जाना जाए वो अनाहद नाद है। नाद के इस रूप की भारतीय संस्कृति में उपासना की जाती रही है। आहत नाद वह नाद है जो दो वस्तु की चोट या स्पर्श से पैदा हो, सुनाई दे। गुरबानी में आतमिक्ता की अध्यात्मिक यात्रा में

आहत नाद अनाहद नाद तक पहुँचने की विधि है। इस लिए प्रभु वंदना और कीर्तन में इस का प्रयोग अनाहद नाद के साथ प्रयोग किया जाता है। जो भक्ति रस प्रवाहित करता है। प्रीतम सिंह गिल नाद और शब्द के संयोग को ही अनहद धुन कहते हैं जो परमात्मा तक पहुँचने की विधि है वो लिखते हैं,

'The universe came into existence through primurdial sound the Holy word. The primordial sound, was the manifestation of God. It was the Anhad Shabada the unstruck music ever going on in the universe. So music is hte manifestation of God, It is the means of realization of God.'[4]

नाद का अभ्यास मनन क्रिया में सहायक है और प्रभु प्रेम की लीनता का आभास होता है। गुरबानी के अनुसार गाने और सुनने दोनों को ही इस प्रक्रिया का अंग माना गया है जैसे कि गुरबानी में दर्ज है:–

गावीअै सुणीअै मनि रखीअै भाउ।।
दुख परहरि सुख घरि लै जाउ।।
गुरमुख नादं गुरमुख वेदं गुरमुख रहिआ समाई।।[5]

डा. महिन्द्र कौर गिल भी अनहद नाद से पहचान करवाते हुए लिखते हैं, 'अनहद नाद शेष सभी नादों से सूक्ष्म और उत्तम माना गया है। निरधंटु में साधना करने योग्य को नाद कहते हैं। संगीत में नाद का अर्थ इस से अलग है। यहां पे 'ना' का अर्थ प्राण और 'द' का अर्थ है, अग्नि अथवा शरीर की अग्नि से जो स्वर उत्पन्न होते हैं उसे नाद कहते हैं। विधि विशेष से किया अभ्यास नाद को अनहद में बदल देता है। अकसर संगीत रस साज की संगीत से प्राप्त किया जाता है, पर जो बिना किसी साज के ऊपर चोट किये बिना उत्पन्न हो वही अनहत रस है। इस प्रकार ज्ञात होता है, सामान्य संगीत का अध्यात्मिकरन करके नाद को अनहद नाद बना लिया गया है। यही आत्म संगीत है.... चित्त की एकाग्रता के अभ्यास करने वाला योगी सुनता है और नाम रसीया भी।[6]

मनुष्य मन संगीत से अति प्रभावित होता है। गुरू साहिबान ने इसी मनुष्य रमज़ को पकड़ कर परमात्मा के गुण गायन और परमात्म कीर्ति का साधन नाद को बनाया। यह भी सत्य है कि परंपरागत तौर पर भी यह संचार माध्यम अति प्रचलित था। वैदिक ऋषियों ने भी गायन और वादन को प्रभु भक्ति का आधार माना। वेदांत में इस को अनुभव आनंद के तौर पर ब्यान किया गया और इसको ज्ञान स्वरूप माना गया है जो

कि ब्रहम का सर्व श्रेष्ठ लक्षण है। मनुष्य ध्यान एकाग्रता में गूँजता अनहद नाद इसका मुहाणा है, भक्ति इसका मूल भाव और संगीत इसका बाहरमुखी संचार माध्यम है।

भक्ति लहर के निकटवर्ती प्रभावों के कारण कुछ विद्वान श्री गुरू नानक देव जी को भी भक्ति क्रान्ति से जोड़ते हैं परन्तु श्री गुरू नानक देव जी ने इस धार्मिक प्रणाली को विलक्षण तौर पर प्रचार किया। उन्होनें बानी के गायन के लिए कीर्तन को माध्यम बनाया। इस कीर्तन जुगत को शब्द और संगीत के साथ जोड़ गया है। शब्द कीर्तन की सारी प्रक्रिया 'गुरमत संगीत' के तौर पर जानी गई जो अध्यात्मिक भावों की सराबोर वादी है।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब की विचारधारा भाव गुरमत यह मानती है कि संसार में जितना भी सिलसिला लाईट एंड साऊंड का है, दुनियां शब्द से बनी है, दुनियां को एक जोत चला रही है, इस को हम ज्ञान लाईट या चानण का नाम भी दे सकते हैं। विज्ञान का मानना है कि संसार की आरम्भता बिगबैंग से हुई। इस्लाम धर्म का कहना है कि

कुन कहिआ कुन आलम होएआ।
अपनी अपनी बोली अंदर दिल का हाल सुणाउ।

इस के अनुसार कुन शब्द कहने से संसार की शुरूआत हुई। हिन्दु धर्म यह कहता है कि सब से पहले रब ने ओम शब्द का उच्चारण किया और संसार की रचना हुई। युनानी ने लगोश शब्द से दुनियां की आरम्भता मानी है, पर गुरमत यह कहती है कि 'कीता पासउ एको कवाउ' परमात्मा के एक बारी कवाउ में पसाउ हुआ है। यह बात तो सत्य ही है, इसमें कोई दो राय नहीं हैं जैसे शेष धर्मों की तरफ से कुन, ओम, लागोश आदि शब्दों से आरम्भता मानी है पर गुरमत ने कोई शब्द नहीं दिया कि कौन से शब्द से दुनियां की आरम्भता की गई। क्योंकि रब ने शब्द का उच्चारण किया चाहे एक सैकण्ड का हज़ारवां हिस्सा करें पर रब ने उच्चारण कर लिया था तो दुनियां बनीं। दुनियां बनना एक दूसरा हिस्सा है, रब का बोलना पहला काम है। रब के बोलने के बाद दुनियां बनी। दुनियां ने शब्द नहीं सुना पर यह जरूर हैं कि रब ने कुछ बोला तो दुनियां बनी। इस लिए गुरमत ने यह निर्णय नहीं दिया कि रब ने कौन से शब्द का उच्चारण किया पर यह यकीनन है कि शब्द का उच्चारण किया। जो शब्द आज भी हमारे दिल के किसी कोने में उसी तरह चला आ रहा है। जिसको लोक एकांत में सुनने को योगी कोई नाम देते हैं। किसी ने पंचशब्द, किसी ने नाद और अनाहद नाद कह दिया। वास्तव में

हमारे अंदर एक धुन हैं सारा विश्व यानि संसार किसी रिद्म में और ताल में है, उस अंतहकर्ण की आवाज़ से, उस नाद के साथ जब हम एक हो जाते है। तो अन्दर के नाद साथ हमारी एक सांझ बन जाती है। यह अंतरीवी नाद/ शब्द से सांझ बनाने के लिए जपुजी साहिब में सात चीज़ों को नियंन्त्रित करने का वर्णन किया हैः–

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु।। अहरणि मति वेद हथिआरु।।
भउ खला अगनि तप ताउ।। भांडा भाउ अमृत तितु ढालि।।
घड़ीअै सबदु सची टकसाल।।[7]

वह जो नाद शब्द यहां आ कर हृदय में पैदा होता है, जिस का शब्द के साथ तालमेल बन जाता है। जैसे कि गुरबानी में दर्ज हैः–

प्रभ की आगिआ आतम हितावै।।[8]

इस तरह जिस शब्द का रब ने उच्चारण किया वो शब्द में समन्वित हो कर आत्मिकता में लीन हो जाता है तो रब की आज्ञा हमें अच्छी लगने लग जाती है। जैसे एक शहर में जाने के लिए हमें मार्ग दर्शक या मील पथ्थर रास्ते की नेतृत्व करते हैं, यह सिर्फ माध्यम है, मंजिल नहीं। इसी तरह हमारे अन्दर एक नाद का बजना, इस का अर्थ रब से तालमेल या समन्वय तो हो गई या हमारी रब के साथ बात हो रही है पर अभी हम रब में अभेद नहीं हुए। यह अभेदता हमारी मन्जिल हैं। अब जब लोगों ने इस नाद सुनने वाले के बारे में सोचा कि वो रब के नज़दीक है उन्होनें नाद सुनने को मन्जिल बनाया। गुरमत इस से अगलेरी सम्भावना की स्रजन करती है। गुरमत अनुसार बानी एक माध्यम है, 'धुर की बाणी' हमारा मार्ग है, बानी ने रब तक ले कर जाना है, बानी में धुपे हुए रब को मिलना हमारी मंजिल है। इस लिए गुरमत ने जिस नाद के बारे में कहा वह इस तरह वर्णित हैंः–

गुण गोबिन्द नाम धुनि बाणी
सिम्रित सासत्र बेद बखाणी।।[9]

गुरू की बानी में पैदा हुई धुनि का अनुसरण करना है। यह बात विचारणीय है कि अध्यात्मिक जीवन के राह में या आम जिन्दगी के अंधेरे में हमेशा आवाज ही हमारी नेतृत्व करती है। जैसे कि अंधेरे में बच्चा डर से मां को आवाज देता है और आवाज़ के माध्यम से ही आसरा ढूँढ लेता है। जब रब ने हमें आवाज दी, रब ने हमारे हृदय में एक नाद पैदा किया तो हमें रब्बी अस्तित्व का अनुभव हो गया। रब हमें दिखाई नहीं दे रहा,

पर बोल हमें एहसास करवा रहे हैं कि रब है, यह गुरमत का परिपेक्ष है, गुरमत की कसौटी है और गुरमत की दृष्टि है जो हमें 'अनहद नाद' के बारे में प्रयोग करते हैं। इसको हम पंच शब्द कह लें या नाद कह लें यकीनन गुरमत अनुसार यह रबी होंद के प्रगटावे की सामर्थय है। इसी परमात्मा कीर्ति को कीर्तन के रूप में निभाया जाता है। गुरू साहिबान का फुरमान हैः–

सहज गुफा महि आसण बाधिआ।।
जोति सरूप अनाहदु वाजिआ।।[10]

गुरमत अनुसार परमात्मा नाद रूप में स्थापित है जिस का स्वरूप शब्द/बानी हैः–

अखर महि त्रिभवन प्रभि धारे।। अखर करि करि बेद बीचारे।।
अखर सासत्र सिमिृति पुराना।। अखर नाद कथन वखाना।।[11]

कुल कायनात के बसने वाले कुदरती आवाजें अस्तित्व रूप में प्रवाहित हैं पर सिर्फ मनुष्य में ही सामर्थ्य है कि वो नदी नाले की कल – कल, वृक्ष की खड़ खड़ और पाक्षि की कू–कू से आगे शब्द सृजन कर सकता है और अपने अन्तर मन की गूंज की अभिव्यक्ति के साधन के रूप में इसका प्रयोग कर सकता है। जब यह अक्षर परमात्म ज्ञान स्वरूप बानी में संगठित और संगीतात्मक पद्वति के अनुसार ढल जाते हैं और भक्ति भावना से पूर्ण लबरेज़ होते हैं तब वह शास्त्र रूप धारण कर लेते हैं। श्री गुरू ग्रंथ साहिब की बानी को हम इसी संदर्भ में जान सकते हैं जैसे प्रीतम सिंह गिल लिखते हैः–
These letters and words God's praises are sung, meditation is done and Moksa is realized. The duties of man are decribed through these words and man is made to perform these and lead a good life."[12]

गुरबानी मनुष्य को साध कर शुभ जीवन का अवसर प्रदान करती है। निश्चित रूप से ही शब्द से राम नाम की चेटक जिस का शुभ फल है। गुरबानी में अंकित हैः–

करम करतूति बेलि बिसथारी राम नामु फलु हूआ।
तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ।।[13]

इस तरह शब्द सारे बृहमंड का मूल है जो चेतना का सृजन करता है और ओंकार ध्वनि तक पहुँचने का मार्ग बनाता है। यह सारी प्रक्रिया मनुष्य मन की एकाग्रता पर टिकी हुई है जिस का आधार निशचित रूप से परमात्मा है। अनहद नाद इस में कड़ी का काम करता है। गुरबानी इस की पुष्टि करती हैः–

अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम।।
मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पियारे राम।।[14]

परन्तु यही गुरू की टेक ओर परमात्मा की कृपालता प्राप्त है।

आपे सबदु आपे नीसानु।।
आपे सुरता आपे जानु।।[15]

सुरत टिकाउ और नाद प्रबलता के संचार भाव में रूकावट बनी पांच मनुष्य बुराईयों को बस करने की विधि भी गुरू साहिबान ने दृढ़ करवाई जो इस प्रक्रिया का आवश्यक अंग है जैसे कि अंकित है, 'पंच सखी मिलि मंगल गाइआ।। अनहद बाणी नादु वजाइआ।'[16] गुरमत में संसार की सबसे निर्मल सचाई के तौर पर पेश किया है, 'नानक निरमल नादु सबद धुनि सचु रामै नामि समाइदा'।।[17] इस तरह विस्मयपूर्ण संगीत से श्री गुरू ग्रंथ साहिब की रसमयी एंव आनन्दमयी वाणी के दर्शन किए जा सकते हैं।

सहायक पुस्तक सूची

1. आदि ग्रंथ, पन्ना 1423
2. डा. सोभाग्वर्धन बृहस्पति, संगीत चिन्तन, अभिषेक पब्लिकेशन्ज, चण्डीगढ, 2004, पन्ना 225
3. डा. श्री मती महारानी शर्मा, पो. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव (सम्पादक), संगीत निबन्ध संग्रह, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006, पन्ना 182

4- Pritam Singh Gill, concepts of Sikhism, New Academic Publishing Co. Jullundar,1979, Page 75.

5. आदि ग्रंथ, जपुजी बानी।
6. डा. महिन्द्र कौर गिल, गुरू अमरदास बाणी विचार, पुष्प प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979, पन्ना 21
7. आदि ग्रंथ, जपुजी बानी।
8. आदि ग्रंथ, पन्ना 275।
9. आदि ग्रंथ, पन्ना 296
10. आसा महला, आदि ग्रंथ, पन्ना 370
11. बावन अखरी, आदि ग्रंथ, पन्ना 54
12. Pritam Singh Gill, concepts of Sikhism, New Academic Publishing Co. Jallundhar, 1979, Page - 12.
13. आदि ग्रंथ, पन्ना 351
14. आसा महला, आदि ग्रंथ, पन्ना 436
15. आदि ग्रंथ, पन्ना 795
16. आदि ग्रंथ, पन्ना 375
17. आदि ग्रंथ, पन्ना 1037